औद्योगिक कार्यकुशलता पर काम के घंटे का प्रभाव

Effect of working hours on Industrial efficiency

कार्यविधि का तात्पर्य उस अवधि से है जितने समय तक कर्मचारी को कार्य करने होते हैं। उचित कार्य अवधि का निर्धारण कार्यकर्ता के स्वरूप तथा कार्य के स्वरूप पर निर्भर करता है। लेकिन सामान्य रूप से 8 घंटे प्रतिदिन को उचित माना जाता है ।

कार्यविधि का निश्चित प्रभाव कार्य कुशलता पर पड़ता है । अध्ययनों से पता चलता है कि जब कार्यावधि अधिक लंबी होती है, तो कर्मचारी अधिक थक जाते हैं और उनकी मनोवृत्ति प्रबंधन की और प्रतिकूल हो जाती है। इसलिए उत्पादन घट जाता है, दुर्घटना बढ़ जाती है और कर्मचारी का स्वास्थ्य गिर जाता है । अतः औद्योगिक कार्यकुशलता पर लंबी कार्यावधि का विपरीत प्रभाव देखा जाता है।

लेकिन बहुत छोटी कार्यावधि होने पर भी उत्पादन घटता है। अधिक छोटी कार्यविधि के स्थिति में डिमिनिशिंग रिटर्न की घटना घटित होती है परिणामत: उत्पादन घट जाता है। अतः प्रबंधन के दृष्टिकोण से बहुत छोटी कार्यावधि हानिकारक होता है। इसलिए कार्यावधि को उचित या ऑप्टिमल बनाने का हर संभव प्रयास किया जाता है। उचित कार्यावधि के स्थिति में कर्मचारी में थकान कम होता है, प्रबंधक की ओर अनुकूल प्रवृत्ति होती है ,सुरक्षा बढ़ जाती है, हड़ताल तथा तालाबंदी की संभावना घट जाती है। इसके साथ-साथ कर्मचारी का स्वास्थ्य भी ठीक रहता है । उपयुक्त कार्याविधि औद्योगिक कार्यकुशलता को बढ़ा देता है, जिससे कर्मचारी तथा प्रबंधन दोनों लाभान्वित होते हैं।

औद्योगिक कार्यकुशलता पर कार्याविधि के प्रभाव को देखने के लिए अनेक अध्ययन किए गए हैं। एक अध्ययन में देखा गया है कि जब कार्यावधि 10 घंटे प्रतिदिन रखा गया तो उसका उत्पादन 90% हुआ और जब कार्यविधि 8 घंटा रखा गया तो उत्पादन 94% हुआ। मायर्स के अध्ययन से भी इस विचार की पुष्टि होती है। एक अध्ययन में कार्य अवधि को 58.2 से घटाकर 50.6 घंटे प्रति सप्ताह कर दिया गया तो उत्पादन में प्रतिदिन 39% की वृद्धि हुई। एक दूसरे अध्ययन में देखा गया जब कार्यावधि को 66 से घटाकर 48.6% तक कर दिया गया ,तो उत्पादन में 68% की वृद्धि हुई। मायर्स ने बतलाया कि कार्यावधि को कम कर देने पर शुरू में उत्पादन घटता है लेकिन जब कर्मचारी समायोजित हो जाते हैं तो उत्पादन बढ़ता है।

याट के अध्ययन से पता चलता है कि कार्यावधि को बहुत छोटा कर देने पर उत्पादन घटने लगता है । उन्होंने अपने अध्ययन में देखा कि कार्यावधि 5.5 दिन प्रति सप्ताह से घटाकर 4 दिन कर दिया गया तो उत्पादन में 6% की कमी हो गई। वर्णन तथा बेडफोर्ड ने एक अध्ययन में देखा जब 40 घंटे प्रति सप्ताह कार्यावधि को रखा गया तो उत्पादन संतोषजनक हुआ । लेकिन कार्य अवधि को अधिक लंबा या छोटा कर दिया गया तो उत्पादन घट गया। इससे पता चलता है कि कार्य अवधि को पर्याप्त या उचित रखना बहुत आवश्यक है।

Optimal working hour के संबंध में किए गए अध्ययनों से कई तरह के प्रमाण मिले हैं । लिटमैन के प्रयोगों से पता चलता

Scanned with CamScanner